माननीय राज्यपाल हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 8 सितम्बर, 2016 को दिल्ली में नौवें वैष्विक कृषि नेतृत्व पुरस्कार–2016 समारोह में दिया गया भाषण

उत्तर प्रदेश के आदरणीय राज्यपाल श्री राम नाइक जी, भारतीय कृषि एवं खाद्य परिषद् के महानिदेषक श्री आलोक सिन्हा जी, चेयरमेन डॉ0 एम0 जे0 खान जी, सभी पुरस्कार विजेतागण, भारतीय कृषि एवं खाद्य परिषद् के सभी अधिकारीगण, पत्रकार साथियो, आमंत्रित महानुभाव, भाईयो व बहनो!

भारतीय कृषि एवं खाद्य परिषद् का मैं अभिनंदन करता हूँ जो global agriculture leadership award को यहाँ पर आयोजित कर रही है। इतनी बड़ी संख्या में, कृषि क्षेत्र में, और खासकर हमारा पेट भरने के लिए जिन चीजों की जरूरत है, उन सब के लिए विभिन्न क्षेत्रों में जो अनुकरणीय कार्य हो रहा है, उच्च कोटि का कार्य हो रहा है, उसके लिए इस संस्था ने पुरस्कार की यह योजना बनाई है। पुरस्कारों की संख्या इतनी विशाल है कि हम सब से पुरस्कार दिलवाते हुए इन्होंने इतनी उठक–बैठक करवाई कि मुझे तो बीच में पानी पीना पड़ा। पर आप भी सोचते होंगे कि यह कष्टदायक नहीं है, यह प्रसन्नता देने वाली है।

आज भारत की सरकार का एकमात्र ध्येय यह है कि 'सबका साथ सबका विकास'। यह 'सबका साथ और सबका विकास' कहना सरल है। लेकिन सबका विकास करना बहुत कठिन है। हम स्वतंत्रता की 70वीं वर्षगाँठ मना चुके हैं। लेकिन आखिरी आदमी तक अब भी स्वतंत्रता का लाभ पहुँचा नहीं है, उसका पेट भरा नहीं है। अपने देष के किसानों की हालत, जिस विषय को लेकर आज हम आयोजन कर रहे हैं, उस विषय से सम्बन्धित जितने लोग हैं, उनकी हालत बहुत खराब है, दयनीय है, चिंता का विषय है। जब तक किसान की हालत ठीक नहीं होती तब तक स्वतंत्रता का सपना सच्चा व पूरा नहीं हो सकता।

देश की स्वतंत्रता के लिए हमने चार बातें माँगी थीं। एक तो राजनीतिक स्वतंत्रता माँगी थी, गद्दी पर जो बैठे हैं वे बदलने चाहिएं। वह काम तो हो गया। लेकिन उसके साथ-साथ तीन बातें और माँगी थीं। उनमें से एक आर्थिक स्वतंत्रता थी। हर व्यक्ति के घर में इतना होना चाहिए जिससे कि वह अपना जीवनयापन कर सके–

साईं इतना दीजिए, जिसमें कुटुम्ब समाय।

मैं भी भूखा न रहूँ, और साधु भी भूखा न जाए।।

यह स्थिति प्रत्येक घर में बननी चाहिए। स्वतंत्रता के लिए जिन क्रान्तिकारियों ने अपने जीवन का बलिदान दिया है, पंजाब और हरियाणा तो इसमें बहुत आगे है, उनका सपना ही यही था कि स्वतंत्रता का लाभ तभी मिलेगा जब प्रत्येक घर के अंदर वे सारी चीजें होंगी जो स्वाभिमान से जीवन बिताने के लिए आवष्यक हैं। जब तक वह नहीं होता तब तक आर्थिक स्वतंत्रता हमें नहीं मिलेगी।

एक हमें सामाजिक स्वतंत्रता चाहिए। अपने संविधान के अंदर भी हमने कहा हुआ है & rise above caste, creed and religion. जब तक संपूर्ण देश में यह वातावरण नहीं बनता, caste, creed and religion के भेद से जब तक हमें मुक्ति नहीं मिलती तब तक सामाजिक स्वतंत्रता का सपना पूरा नहीं हो सकता। सबको समान अवसर मिलने चाहिएं, वर्गभेद नहीं चलना चाहिए। इस प्रकार की सामाजिक स्वतंत्रता हमको नहीं मिली है।

एक हमें सांस्कृतिक स्वतंत्रता चाहिए थी। एक हजार वर्ष की गुलामी, खासकर अंग्रेजों की गुलामी ने हमारी संस्कृति को, हमारे मूल्यों को, हमारी जीवन–पद्धति को समाप्त कर दिया है। वह हम जब तक फिर से स्थापित नहीं करते, तमपदेजंजम नहीं करते तब तक सांस्कृतिक स्वतंत्रता हमको नहीं मिलेगी। ये सारी स्वतंत्रताएँ अभी बाकी हैं। वे जब तक नहीं मिलती हैं तब तक सबका विकास नहीं माना जाएगा।

मुझे ऐसा लगता है कि 60 प्रतिशत आबादी agriculture और उससे सम्बन्धित चीजों की पैदावार और उत्पादन पर निर्भर है। और हमारी पूरी आबादी 125 करोड़ लोग तो इसलिए कृषि पर निर्भर हैं कि हमारा किसान कहीं crop holiday न कर दे। सब लोग हड़ताल करते हैं, छुट्टी मनाते हैं अगर कहीं देश के किसानों ने एक साल भी holiday मना लिया, खेती अगर नहीं की तो हम तो भूखों मर जाएँगे। यह 250 मिलियन टन जो अनाज पैदा होता है वह पैदा नहीं होगा। इसलिए इस दृष्टि से जब तक खेती और इस पर निर्भर चीजों की प्रगति नहीं होती तब तक भारतवर्ष जो 21वीं शताब्दी में करना चाहता है वह भी नहीं कर पाएगा।

हमारे देश की सरकार चाहती है कि हमारी विकास दर 10 प्रतिशत हो। पहले हम 6 प्रतिशत से आगे कभी नहीं बढ़े। हमारी योजनाएँ 10 प्रतिशत विकास दर की हों तो उनमें खेती का प्रतिशत 3 है। यह जितना बढ़ेगा उतनी ही हमारे देश की

विकास दर बढ़ेगी। इसलिए अगर वह 4 प्रतिशत पर आ जाती है तो हमारी विकास दर जो हम चाहते हैं वह हमको प्राप्त हो जाएगी।

आज हम खेती करते हैं। लेकिन उसमें खर्च बहुत होता है। यह खर्च कैसे कम किया जाए ? ये आपको जो विभिन्न क्षेत्रों के पुरस्कार मिले हैं, इस बात पर भी विचार कीजिए कि खर्च कैसे कम किया जाए, हमारी खेती की उत्पादन क्षमता किस तरह से बढ़ाई जाए और किस तरह उसकी गुणवत्ता बढ़ाई जाए।

विश्व व्यापार संगठन आ जाने के बाद हमारा कंपीटीशन पूरे विश्व से होता है। जब तक ये तीन चीजें हम प्राप्त नहीं कर पाएँगे– एक तो कम लागत की उपज, हमारी उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता, तब तक हम विश्व के बाजार में ठहर नहीं पाएँगे। यह जो agriculture leadership award की प्रक्रिया हमने शुरू की है, यह कृषि क्षेत्र में काम कर रहे लोगों का उत्सावर्धन करेगी। इससे विभिन्न प्रदेश कितनी बड़ी प्रगति कर रहे हैं ? कई प्रदेश तो तीन–तीन बार, चार–चार बार ये पुरस्कार पा चुके हैं।

मुझे गर्व है कि मैं मध्यप्रदेश का निवासी हूँ, वहाँ पर तो सरकार ने कमाल किया है। वे कृषि क्षेत्र में 7 लाख हेक्टेयर से 21 लाख हेक्टेयर तक चले गए। उन्होंने खेती की विकास दर 18 प्रतिशत तक कर दी। हरियाणा भी बहुत आगे है।

इसलिए मैं Indian Council of Food and Agriculture का अभिनंदन करता हूँ, बहुत–बहुत बधाई देता हूँ। इस क्षेत्र में आप जो काम कर रहे हैं उस काम को और आगे बढ़ाएँ और 21वीं शताब्दी में भारतवर्ष की प्रगति का जो लक्ष्य है उसे पूरा करने में सहयोग करें।

धन्यवाद!